सदीनामा

सोच में इज़ाफा www.sadinama.in ISSN : 2454-2121

वर्ष-19 ❍ अंक-8 ❍1 से 30 जून 2019❍ पृष्ठ-32 ❍ R.N.I. No. WBHIND/2000/1974 ❍मूल्य - 10 रुपये

लोकतंत्र को चाहिए मजबूत विरोधी नेता

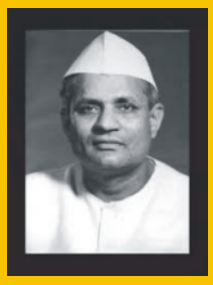

राम सुभग सिंह

यशवंत राव चवन

सी.एम.स्टीफन

जगजीवन राम

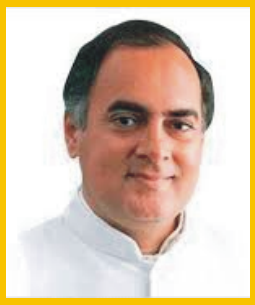

राजीव गाँधी

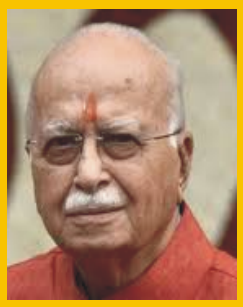

एल. के. आडवाणी

अटल बिहारी वाजपेयी

पी.वी. नरसिंह राव

शरद पवार

सोनिया गाँधी

सुषमा स्वराज

20 मई 2014 से आज तक अधिकारिक तौर पर खाली

सम्पादकीय

हर मिथक तोड़ता है भारतीय गणतंत्र

सत्रहवीं लोकसभा के परिणाम आ चुके हैं। उत्तर, अल्पसंख्यक, दक्षिण, केन्द्र दलित, जातिगत विचारधाराओं की राजनीति हाशिये पर है। यह भारतीय गणतंत्र है जो हर के चुनाव में मिथक तोड़ता है। उ॰ प्र॰ (अविभाजित) की 85 सीटों के बल केन्द्र में सरकारें बनती थीं। भू॰ पू॰ प्रधानमंत्री स्व॰ नरसिंह राव ने इस मिथक को गलत साबित किया। दलित और जातिगत राजनीति करने वालों दलों ने महागठबंधन बनाया पर जनता ने इसे भी नहीं स्वीकारा। अल्पसंख्यक, जातिगत, दलित समीकरण भी विफल रहे। हिंसा की राजनीति से चुनावी वैतरणी पार करने वाले दल सकते में हैं। जय प्रकाश आन्दोलन के समय बिहार पर निर्भय हाथरसी की एक कविता -

जागते रहो.....

मेरा सारा देश ही बिहार न बन जाये।

बिहार में जयप्रकाश के आन्दोलन से निकले नेता बाद में जातिगत रहनुमाई करने लगे और यह सिलसिला अभी तक जारी है। हाँ 'सुशासन बाबू' के आने के बाद इस पर रोक लगी है पर यह ट्रेड अब बंगाल आ गया है। पं॰ बंगाल में चुनाव जीतने के हथकंडों को आजमाने में काम आये पं॰ ईश्वर चन्द्र विद्यासागर जिनकी टूटी मूर्ति के पोस्टर सारे कोलकाता में दीवालों पर चिपके कईयों की राय है कि यह दुर्घटना कुछ दिन पहले घटी होती तो बंगाल में पहले और दूसरे स्थान आने वाली पार्टियाँ भारी नुकसान उठाती हैं। एक और ध्यान देने योग्य है परिवारवाद के खिलाफ जनता की नाराजगी। नेताओं को अपनी पार्टियों पर ध्यान देना चाहिए। कांशीराम जी के बाद उनकी लिगेसी संभाल रही मायावती जी को वापस अपने लोगों के बीच जाना चाहिए और भतीजेवाद से बचना चाहिए।

अल्पसंख्यकों को जिस आतंक के हौव्वे के सहारे संशंकित किया जा रहा है वह खत्म होना चाहिए। देश हम सबका है जिनके पुरखे विभाजन के बाद पाकिस्तान नहीं गये, ये देश उनका भी है। वे क्यों भय मुक़्त नहीं रहेंगे। हम सब ऐसी योजनाएं बनाय कि कोई भय न हो। हम भयादोहन की स्थिति को बदलें। बजाय ये कहने के किं ''दुधारी गाय की लात सब सहते हैं, अत: हम तुष्टीकरण कर रहे हैं।'' इससे बचना चाहिए और समग्र विकास के लिए योजनाएँ बनानी चाहिए। किसी कौम को अविश्वास की दृष्टि देखने की स्थिति ही क्यों आए? कही भी भेदभाव नहीं हो और असंवेदनशीलता को बढ़ाया नहीं जाना चाहिए।

हमने इस परिवर्तन पर कई मित्रों की राय मांगी हैं। आप इनकी राय भी पढ़ें और अपनी प्रतिक्रिया भी हमें भेजें। आपकी कोई भी राय इस देश के लिए महत्वपूर्ण है और सुझाव आमूलचूल परिवर्तन कर सकता है।

चलते चलते 'नोटा' पर भी बात करें। कई राज्य सरकारों ने अपने यहाँ स्थानीय चुनावों में 'नोटा' को हटा ही दिया है। नोटा किसी सोटे से कम नहीं है। ज्यादातर संसदीय क्षेत्रों में नोटों के वोटों की प्रतिशत कई निर्दलीय के योग के बराबर है और यह शुभ लक्षण नहीं। नोटा देने वाले तो फिर भी ठीक है जो वोट देने नहीं आए उन पर भी कुछ सोचा जाना चाहिए।

जो वोट न दें उनकी नागरिक सुविधाएं कम की जायें।

यह चुनाव विचित्र तरह से लड़ा गया। इसमें सोशल मीडिया की भूमिका बहुत ही प्रभाव रही। जिनके हाथ में मोबाइल है उनकी सोच बदल रही है। बहुत सारे मित्र अब साम्प्रदायिकता को कोई मुद्दा नहीं मानते। बहुत सारे मित्र खेमा बदलकर वामपंथी से दक्षिणपंथी हो गये हैं और यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। अगर सरकारें काम करने के बनी हैं तो काम करें। नहीं करें तो जायें। बंगाल में उद्योग-धंधें चौपट हैं। नया निवेश कम हो रहा है। पार्टियां अपने कैडर संतुलित नहीं कर पा रही हैं। मुझे डर है कि बंगाल अपने पुराने दिनों यानि 'विकास' कम पर दीवालों पर ''केन्द्र की वंचना'' के पोस्टर, लगातार दोष देने की राजनीति की शुरुआत। पहले इतनी सारी विपरीत चीजों के बावजूद गुंडे नियंत्रित थे पार्टी के लोग जो कहते थे वह फाइनल था और बीच में कोई हस्तक्षेप नहीं था। अब अलग अलग गुट हैं और कोई सुनने-सुनाने वाला नहीं।

जीतेन्द्र जितांशु
jjitanshu@yahoo.com

कई चिट्ठियों में से एक पत्र

(मई अंक में रमणिका गुप्ता पर कैलाश दहिया का एक लेख छपा था। इस लेख पर हमें बहुत सारी तीखी, अनतीखी प्रतिक्रियाएं मिलीं हैं। फोन मिले और धमकियाँ भी। लेखक की स्वतंत्रता और सम्पादकीय सीमाएँ समाज और राष्ट्र के अलिखित कानून हैं। हम हर सहमति असहमति को स्थान देना चाहते हैं, कृपया हमें जरूर पत्र लिखें। इनमें से एक महत्वपूर्ण पत्र आपके लिए –उप-सम्पादक, मिनाक्षी सांगानेरिया)

आदरणीय,

सम्पादक 'सदीनामा'

आपको बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने आजीवक चिंतन के वैचारिक विमर्श को अपनी पत्रिका में छापने का साहसिक कदम उठाया। आजीवक चिंतन के रूप में विख्यात कैलाश दाहिया ने दलित चिंतन के कमजोर और पथभ्रष्ट व्यक्तियों की पहचान अपने आलोचनात्मक लेख ''आपहुदरी और इसके अय्यार इतिहास के हवाले'' शीर्षक से उनकथित दलित लेखक-लेखिकाओं की खोल बांध कर रख दी है जो चंद स्वार्थों की खातिर कौम के नैतिक मूल्यों से समझौता कर रहे थे। अब उनकी पहचान दलित (आजीवक) कौम में 'मुनाफिक' के रूप में की गई है। उन उदारवादियों (रमणिकावादियों) के भी चेहरे बेनकाब हो गये हैं जो दलित, आदिवासी नेतृत्व को हड़प कर गुलामी के गर्भ में डालने पर उतारू थे।

दलित (आजीवक) कौम के स्वतंत्र ऐतिहासिक आधार को निर्मित करने वाले दार्शनिक डॉ॰ धर्मवीर जी के विरोध में कुछ तथाकथित सिरफिरी स्त्रियों ने जूते-चप्पल फेंके वह आजीवक इतिहास का काला अध्याय है।

सच में मनुष्य के सरलतम उत्कर्ष को कुंठित करने वाला वह कृत्य था। डॉ॰ धर्मवीर जी के चले जाने पर लगातार इस मुहिम को कैलाश दाहिया सर और प्रो॰ भूरेलाल सर के मार्गदर्शन में हम लोग विचार-विमर्श कर रहे हैं।

अत: आपसे आशा रहेगी कि इसी तरह दलित कौम के वैचारिक विमर्श को अपनी पत्रिका में शामिल करते रहेंगे।

पुन: धन्यवाद!

संतोष कुमार
शोधार्थी (हिन्दी-विभाग), गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर,
e-mail : santoshsingh3395@gmail.com
मोबाईल - 9565017517

www.sadinama.in

पत्रिका का ताना-बाना

संपादक
जीतेन्द्र जितांशु
9231845289

सम्पादकीय सलाहकार
यदुनाथ सेउटा

उप-सम्पादक
तितिक्षा
मिनाक्षी सांगानेरिया

संरक्षक मंडल :
आरती चक्रवर्ती
एच॰ विश्ववाणी
शिवेन्द्र मिश्र
राजेन्द्र कुमार रुइयां (अमेरिका)

डीटीपी, लेआउट तथा भूल-सुधार
राजेश्वर राय
रमेश कुमार कुम्हार
मारिया शमीम

कवर पेज कलर का चुनाव :
उषा सिंह, दिल्ली

केहु के कुछो ना दिहल जाला

पत्राचार का पता :

संपादक - सदीनामा

Purbyan
38E, Prince Bakhtiar Sah Road
Kolkata - 700 033
West Bengal

E-Mail : sadinama2000@gmail.com

कविता

जाबिर हुसेन

अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य प्राध्यापक रहे। जेपी तहरीक में बेहद सक्रिय भूमिका निभाई। आपातकाल के दौरान, भूमिगत साहित्य का संपादन-प्रकाशन।

हिंदी-उर्दू में दो दर्जन से ज्यादा किताबें प्रकाशित। विधान परिषद् की पत्रिका साक्ष्य का संपादन। तेरह वर्षों से हिंदी पत्रिका दोआबा का संपादन।

सम्मान - 2005 में उर्दू कथा-डायरी रेत पर खेमा के लिए साहित्य अकादमी सम्मान। 2012 में नवें विश्व हिंदी सम्मेलन (जोहान्सवर्ग, दक्षिण अफ्रीकन) में विश्व हिंदी सम्मान।

सम्पादन : छह जिल्दों में बहार हुसेनाबादी का संपूर्ण साहित्य, मेरा सफर तवील है : अख्तर पयामी, दीवारे शब, हिसारे शब, निगारे शब (उर्दूनामा के अंक)

247, एम आई जी, लोहियानगर, पटना - 800020
मो.- 09431602575, jabirhusain@yahoo.com

उस रात आए थे इब्नबतूता

हल्की दस्तक ने
मेरा ध्यान
उपन्यास से हटा दिया

दरवाजा खोलते ही
अंधेरे का हमला हुआ
चेहरा एकदम से अजनबी था
मेरे पूछे बगैर
आनेवाले ने कहा

मैं इब्न बतूता हूं
कई सदी बाद
दोबारा इंडिया आया हूँ
जामा मस्जिद में
किसी ने आपका
पता बताया
इतनी रात गए आपको जहमत देने के लिए
माफी चाहता हूँ
दरअसल अगले दो-तीन दिन यहाँ रहकर
मुझे गुजरात जाना है
सोचा आपसे मिलता चलूं

तब तक मेरी पत्नी जग गई थी
इब्न बतूता के लिए क़हवा ले आई
कहवा पीते-पीते इब्न बतूता ने कहा

बहुत बदल गया है इंडिया
पहचान में ही नहीं आता
समंदर, दरियां सब बदल गये हैं।
लोगों की पोशाक भाषा भी पहले जैसी
नहीं रह गई
मैं तो ये तब्दीली देख हैरान हूँ
मैंने
शब बखैर कहते हुए
उन्हें मेहमानों के
सोने का कमरा दिखाया

इब्न बतूता ने अपनी आंखों से देखा और शर्मशार हुए

कुछ सम्भ्रांत जमाअतें खुशरंग लिबास में
कतारबद्ध खड़ी है
सबसे आगे है फ़तबा देनेवाले बुजुर्ग
जिनके सिरों पर अमामे बंधे है

उनके पीछे खड़े हैं शिकन-आलूद
कपड़ा में लिपटे नौकरीपेशा लोग

कविता

जिन्हें सिर्फ अपनी
सुविधाओं का ख्याल रहता है

उनके बाद खड़ी है साइकिल के
पंकचर ठीक करनेवालों
फल और सब्जियाँ बेचनेवालों
तथा कपड़े सीने वालों की भीड़

हवाएँ अचानक तेज चलने लगीं
तो कतार में सबसे आगे खड़ी
जमाअतों के पैर लड़खड़ाने लगे
मुंह से खौफनाक चीखें निकलीं
फ़तबों की अटारियां डोलने लगीं
दुआ के लिए आसमान की तरफ़
उठे हाथ कांप उठे

हवाओं ने आंधी का रूप लिया
तो सबसे पहली कतार में खड़े
संभ्रांत बुजुर्गों के अमामे
जमीन पर गिर पड़े
इसके बाद दूसरी कतार में खड़े लोगों की
पगड़ियां गिरी, कुछ टोपियां ढलकीं
लेकिन आखिरी क़तार की भीड़
ज़मीन पर मजबूतों से
अपने पांव जमाए खड़ी रही

एक और मंजर जो इब्न बतूता ने देखा

आगे बढ़ने पर इब्न बतूता ने
एक और
दिल दहलाने वाला
मंजर देखा

दरबार हाल में कई
झुकी कमर वाले बुजुर्ग
राजा की कमर की सीध में
पुलकित खड़े थे

राजा पद और सम्मान
देकर उनकी झुकी कमर
को सीधा करने की
कोशिश कर रहा था

सूरज नींद ओढ़े सोया है

धूप निकली तो है
लेकिन सहमी-सहमी
पाम ट्री की घनी शाखों
से छनकर सेहन के
बाहरी हिस्से तक आने में
उसे घंटों लग गये हैं

गमलों में सजे पौधों ने
उसका स्वागत किया
पर उसका सिहरना जारी है
बादलों ने कब से
जकड़ रखा है उसे
अपनी बाहों में
बेचैन बदहवास धूप
सिर उठाकर सूरज को देखती है
सूरज नींद ओढ़े सो रहा है
एक सदी से

किसके हिस्से की धूप

किसके हिस्से की धूप
ओढ़ रक्खी है मैंने
अपने बदन पर
किसके हिस्से की नींद
सजा रक्खी है मैंने
अपनी आँखों में

पता नहीं
किसके हिस्से के
ख्वाब उतर आए हैं
मेरे दिल में

मंथन

एक टिप्पणी चुनाव परिणाम से पहले एक मुद्दा 'नोटबंदी'

संजय द्विवेदी
लेखक भोपाल से प्रकाशित पत्रिका मिडिया विमर्श के सम्पादक हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देखकर अनेक राजनीतिक टिप्पणीकारों को इंदिरा गांधी की याद आने लगी है। कारण यह है कि भाजपा जैसे दल में भी उन्होंने जो करिश्मा किया है, वह असाधारण है। कांग्रेस में रहते हुए इंदिरा गांधी या सोनिया गांधी हो जाना सरल है, किंतु भाजपा में यह होना कठिन है, कठिन रहा है, मोदी ने इसे संभव किया है। संगठन और सत्ता की जो बारीक लकीरें दल में भी कभी थीं, उन्होंने उसे भी पाट दिया है।

अटल जी के समय में भी लालकृष्ण आडवानी नंबर दो थे और कई मामलों में प्रधानमंत्री से ज्यादा ताकतवर पर आज एक से दस तक शायद प्रधानमंत्री ही हैं। खुद को एक ताकतवर नेता साबित करने का कोई मौका नरेन्द्र मोदी नहीं चूकते। अरसे से कारपोरेट और अपने धन्नासेठ मित्रों के प्रति उदार होने का तमगा भी उन्होंने नोटबंदी कर एक झटके में साफ कर दिया है। वे अचानक गरीब समर्थक होकर उभरे हैं। यह अलग बात है कि उनके भ्रष्ट बैंकिग तंत्र ने उनके इस महत्वाकांक्षी कदम की हवा निकाल दी। बाकी रही-सही कसर आयकर विभाग के बाबू निकाल ही देंगे।

'मैं देश नहीं झूकने दूंगा' और 'अच्छे दिन' के वायदे के साथ आई सरकार ने अपना ज्यादा समय गुजार लिया है। इसमें दो राय नहीं कि इन दिनों में प्रधानमंत्री प्राय: अखबारों के पहले पन्ने की सुर्खियों में रहे और लोगों में राजनीतिक चेतना जगाने में उनका खास योगदान है। या यह कहें कि प्रधानमंत्री के इर्द-गिर्द भी खबरें बनती हैं, यह अरसे बाद इन्होंने साबित किया है। छुट्टियों के दिन रविवार को भी 'मन की बात' जैसे आयोजनों या किसी रैली के बहाने टीवी पर राजनीतिक दृष्टि के खाली दिनों में भी काफी जगह घेर ही लेते हैं। उनका चतुर और चालाक मीडिया प्रबंधन या चर्चा में रहने का हुनर काबिले तारीफ हैं। बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर इंदिरा जी ने राष्ट्रीय राजनीति में खुद के होने को साबित किया था और एक बड़ी छलांग लगाई थी, नोटबंदी के बहाने भी नरेन्द्र मोदी ने राजनीतिक विमर्श को पूरी तरह बदल दिया। हालात यह हैं कि संसद नोटबंदी के चलते नहीं चली। पूरा विपक्ष नोटबंदी पर सिमट आया था। नोटबंदी के अकेले फैसले से नरेन्द्र मोदी ने यह बता दिया है कि सरकार क्या कर सकती है। इससे उनके मजबूत नेता होने की पहचान होती है, जिसे फैसले लेने का साहस है। आप देखें तो इस अकेले फैसले ने उनकी बन रही पहचान को एक झटके में बदल दिया है।

सूट-बूट का तमगा लेकर और भूमि अधिग्रहण कानून के बहाने कारपोरेट समर्थक छवि में लिपटा दिए प्रधानमंत्री ने अपनी विदेश यात्राओं से जितना यश कमाया उससे अधिक उन पर तंज कसे गए। यह भी कहा गया ''कुछ दिन तो गुजारो देश में।'' लेकिन विमुद्रीकरण का फैसला एक ऐसा फैसला था जिसे गरीबों का समर्थन मिला। विपक्ष भी इस बात से भौंचक है कि परेशानियां उठाकर भी आम लोग नरेन्द्र मोदी के इस कदम की सराहना कर रहे हैं। अपेक्षा से अधिक तकलीफों पर भी लोग सरकार की बहुत मुखर आलोचना नहीं कर रहे हैं। दिल्ली और बिहार की चुनावी हार से सबक लेकर प्रधानमंत्री ने शायद समाज से सबसे अंतिम छोर पर खड़े लोगों को साधने की सोची है। उनकी 'उज्ज्वला योजना' को बहुत सुंदर प्रतिसाद मिला है। इसके चलते उनके अपने दल से सांसद अपनी न पूरी होती महत्वाकांक्षाओं के बावजूद भी खामोश हैं। अभी दल के भीतर-बाहर कोई बड़ी चुनौती खड़ी होती नहीं दिख रही है। मोदी ने स्मार्ट सिटी, स्टैंड अप इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, स्वच्छ भारत, मेक इन इंडिया जैसे नारों से भारत के नव-मध्य वर्ग को आकर्षित किया था किन्तु बिहार और दिल्ली की पराजय ने साबित किया, कि यह नाकाफी है।

असम की जीत ने उन्हें हौसला दिया और नोटबंदी का कदम एक बड़े दाव के रूप में खेला गया है। जाहिर तौर पर एक गरीब राज्य उत्तर प्रदेश में इस कदम की पहली समीक्षा होगी। उत्तर